अल्पकाल के क्षण भंगुर सुख के पीछे तुम मत भागो
ज्ञान रत्नों की कमाई के लिए रोज अमृत वेला जागो
जब से छोड़ा परमधाम हम शिव बाबा से बिछड़ गए
पांच विकारों के कारण जीवन के ढंग सारे बिगड़ गए
नयनों में भरकर आंसू हमने किया अपने बाप को याद
कल्प का अंत आया तो उसने सुन ली हमारी फरियाद
आ गया है वो हम सबको दुखधाम से ले जाने के लिए
गीता ज्ञान सुनाता हमें मनुष्य से देवता बनाने के लिए
21 जन्मों का सुख पाने की बड़ी सहज विधि बताता
राजयोग के बल से हमें सम्पूर्ण पावन बनना

सिखाता
विकारों में फंसे बच्चों पर बाबा खाता है
कितना तरस
पावन बनाता जाएगा भले बीत जाए कितने ही
बरस
समय ऐसा आ गया अब प्रचण्ड योगाग्नि
जलाओ
देह अभिमान के अंश वंश को अब पूरा ही
पिघलाओ
अवगुणों की खाद निकालकर खुद को पावन
बनाओ
ज्ञान रत्नों के महादानी बनकर ऊँच पद स्वर्ग में
पाओ
ॐ शांति